दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

ब्लू हेलमेट: संयुक्त राष्ट्र शांति सैनिक

www.nextias.com

ब्लू हेलमेट: संयुक्त राष्ट्र शांति सैनिक

सन्दर्भ

- संघर्ष से लगातार बढ़ते विश्व में, संयुक्त राष्ट्र (UN) शांति सैनिकों की भूमिका, जिन्हें प्रायः 'ब्लू हेलमेट' कहा जाता है, पहले कभी इतनी महत्वपूर्ण नहीं रही। हालाँकि, इस बात को लेकर चिंता बढ़ रही है कि ये शांति सैनिक अपने दायित्व को प्रभावी ढंग से पूरा नहीं कर रहे हैं, और प्रायः बढ़ती हिंसा के सामने वे सिर्फ़ मूकदर्शक बनकर रह जाते हैं।

ब्लू हेल्मेट्स (शांति रक्षक) के बारे में

- संयुक्त राष्ट्र (UN) शांति सैनिक, जिन्हें सामान्यतः 'ब्लू हेलमेट' के रूप में जाना जाता है, विश्व भर के संघर्ष-ग्रस्त क्षेत्रों में आशा और स्थिरता का प्रतीक हैं।
- विभिन्न राष्ट्रीय सेनाओं, पुलिस बलों और नागरिक विशेषज्ञों से लिए गए ये शांति सैनिक, शांति तथा सुरक्षा बनाए रखने, नागरिकों की रक्षा करने एवं शांति समझौतों के कार्यान्वयन का समर्थन करने के लिए संयुक्त राष्ट्र के जनादेश के तहत कार्य करते हैं।
- उन्हें विश्व भर में संघर्ष क्षेत्रों में शांति और सुरक्षा बनाए रखने का कार्य सौंपा गया है। वे संयुक्त राष्ट्र चार्टर में उल्लिखित सिद्धांतों के तहत कार्य करते हैं, जिसमें विवादों का शांतिपूर्ण समाधान (अध्याय VI) एवं आक्रामकता के मामलों में सुरक्षा परिषद प्राधिकरण के साथ सशस्त्र बल का उपयोग (अध्याय VII) दोनों शामिल हैं।
- विश्व स्तर पर 100,000 से अधिक शांति सैनिकों की तैनाती के बावजूद, संयुक्त राष्ट्र को महत्वपूर्ण परिस्थितियों में निर्णायक रूप से कार्य करने में असमर्थता के लिए आलोचना का सामना करना पड़ा है।
- **ऐतिहासिक सफलता:** ऐतिहासिक रूप से, संयुक्त राष्ट्र को कंबोडिया, मोजाम्बिक, सिएरा लियोन, अंगोला, तिमोर लेस्ते, लाइबेरिया और कोसोवो जैसे देशों में शांति अभियानों में उल्लेखनीय सफलता मिली है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना की अवधारणा 1948 में तब उत्पन्न हुई जब संयुक्त राष्ट्र ने इजरायल और उसके अरब पड़ोसियों के बीच युद्धविराम समझौते की निगरानी के लिए सैन्य पर्यवेक्षकों को तैनात किया।
  - तब से, 1 मिलियन से अधिक शांति सैनिकों ने वैश्विक स्तर पर 70 से अधिक अभियानों में भाग लिया है।
- महासचिव डैग हैमरशॉल्ड द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रतिष्ठित नीले हेलमेट और बेरेट इन कर्मियों को अन्य सैन्य बलों से अलग करते हैं।

भूमिकाएँ एवं उत्तरदायित्व

- संयुक्त राष्ट्र शांति सैनिक तीन मुख्य सिद्धांतों के तहत कार्य करते हैं: पार्टियों की सहमति, निष्पक्षता, और आत्मरक्षा एवं जनादेश की रक्षा के अतिरिक्त बल का प्रयोग न करना। उनकी भूमिकाओं में शामिल हैं:

- ○ **नागरिकों की सुरक्षा:** कई मिशनों में, नागरिकों की सुरक्षा सर्वोपरि है। शांति सैनिक प्रायः शत्रुतापूर्ण और खतरनाक परिस्थितियों में भी सुरक्षित वातावरण प्रदान करते हैं।
- ○ **शांति प्रक्रियाओं की निगरानी:** वे युद्ध विराम एवं शांति समझौतों का निरीक्षण करते हैं और उन पर रिपोर्ट करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि सभी पक्ष अपनी प्रतिबद्धताओं का पालन करें।
- ○ **चुनावों का समर्थन:** शांति सैनिक चुनावों के आयोजन और निगरानी में सहायता करते हैं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे स्वतंत्र और निष्पक्ष हों।
- ○ **प्रशिक्षण और समर्थन:** वे स्थानीय सुरक्षा बलों को प्रशिक्षित करने में सहायता करते हैं और पूर्व लड़ाकों को समाज में फिर से शामिल होने में सहायता करते हैं।

वैश्विक योगदान

- शांति स्थापना एक सामूहिक प्रयास है, जिसमें 120 से अधिक देश योगदान देते हैं। बांग्लादेश, नेपाल, भारत और रवांडा जैसे देश कर्मियों के शीर्ष योगदानकर्ताओं में से हैं, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, जापान और जर्मनी जैसे देश महत्वपूर्ण वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं।
- यह अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने की साझा जिम्मेदारी को रेखांकित करता है।

संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना में भारत का योगदान

- अपनी स्वतंत्रता के बाद से ही भारत अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र के प्रयासों का दृढ़ समर्थक रहा है।
- संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना में भारत की भागीदारी 1950 में शुरू हुई जब इसने कोरिया में संयुक्त राष्ट्र मिशन का समर्थन करने के लिए चिकित्सा कर्मियों को तैनात किया।
- तब से भारत ने 49 से अधिक शांति अभियानों में भाग लिया है, जिसमें 200,000 से अधिक सैनिक और बड़ी संख्या में पुलिस कर्मियों का योगदान रहा है।
- यह भारत को संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों में सबसे बड़ा और सबसे लगातार योगदान देने वाले देशों में से एक बनाता है।

प्रमुख योगदान

- **सैन्य योगदान:** भारत लगातार शीर्ष सैन्य योगदान देने वाले देशों में से एक रहा है।
  - ○ 2023 तक, भारत ने 12 संयुक्त राष्ट्र मिशनों में लगभग 5,900 सैन्य कर्मियों को तैनात किया था।
  - ○ भारतीय शांति सैनिकों ने कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य, दक्षिण सूडान और लेबनान सहित कुछ सबसे चुनौतीपूर्ण और अस्थिर क्षेत्रों में सेवा की है।
- **नेतृत्वकारी भूमिकाएँ:** भारत ने संयुक्त राष्ट्र के विभिन्न मिशनों को 15 बल कमांडर प्रदान किए हैं, जो वैश्विक शांति के प्रति अपने नेतृत्व और प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
  - ○ विशेष रूप से, भारतीय अधिकारियों ने सैन्य सलाहकार, पुलिस सलाहकार और बल कमांडर जैसे प्रमुख पदों पर कार्य किया है, तथा शांति अभियानों की रणनीतिक योजना और क्रियान्वयन में योगदान दिया है।
- **शांति स्थापना में महिलाएँ:** शांति स्थापना की भूमिकाओं में महिलाओं को तैनात करने में भारत अग्रणी रहा है।

- 2007 में, भारत ने लाइबेरिया में पहली महिला-सशस्त्र पुलिस इकाई भेजी, जिसने कानून और व्यवस्था को बहाल करने और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने अन्य देशों के लिए अनुसरण करने के लिए एक मिसाल कायम की है।

- **चिकित्सा और इंजीनियरिंग सहायता:** भारतीय शांति सैनिकों ने संघर्ष क्षेत्रों में आवश्यक चिकित्सा और इंजीनियरिंग सहायता प्रदान की है।
    - भारतीय चिकित्सा इकाइयाँ शांति सैनिकों और स्थानीय जनसँख्या दोनों को स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने में सहायक रही हैं, जबकि इंजीनियरिंग इकाइयों ने युद्धग्रस्त क्षेत्रों में बुनियादी ढाँचे के पुनर्निर्माण में सहायता की है।

प्रभाव और मान्यता

- भारतीय शांति सैनिकों ने अपनी व्यावसायिकता, समर्पण और बहादुरी के लिए ख्याति अर्जित की है। वे नागरिकों की रक्षा करने, पूर्व लड़ाकों को निरस्त्र करने और संघर्ष से शांति की ओर संक्रमण का समर्थन करने में शामिल रहे हैं।
- संयुक्त राष्ट्र ने कई मौकों पर भारतीय शांति सैनिकों द्वारा किए गए बलिदानों को उजागर करते हुए भारत के योगदान को मान्यता दी है। संयुक्त राष्ट्र के झंडे के नीचे सेवा करते हुए 160 से अधिक भारतीय शांति सैनिकों ने अपनी जान गंवाई है।

वर्तमान संघर्ष

- आज, यूक्रेन और पश्चिम एशिया में चल रहे संघर्षों के कारण संयुक्त राष्ट्र स्वयं को इसी तरह की मुश्किल में पाता है।
- यूक्रेन पर रूसी आक्रमण और इजरायल और गाजा के बीच संघर्ष ने संयुक्त राष्ट्र की निष्क्रिय भूमिका को उजागर किया है, जो नागरिकों के जीवन की प्रभावी रूप से रक्षा करने में विफल रहा है।
- पर्याप्त सैन्य और पुलिस बलों तक पहुँच होने के बावजूद, संयुक्त राष्ट्र ने इन क्षेत्रों में हिंसा को रोकने के लिए उन्हें प्रभावी रूप से तैनात नहीं किया है।

चुनौतियाँ और विकास

- पिछले कुछ दशकों में शांति स्थापना की प्रकृति में उल्लेखनीय बदलाव आया है। आधुनिक शांति स्थापना मिशन बहुआयामी हैं, जिनमें न केवल सैन्यकर्मी बल्कि पुलिस, कानूनी सलाहकार और मानवीय विशेषज्ञ भी शामिल होते हैं।
- शांति सैनिकों को प्रायः विषम खतरों का सामना करना पड़ता है, जिसके लिए उन्हें संघर्ष और अस्थिरता के नए रूपों के अनुकूल होना पड़ता है।
- अपने प्रयासों के बावजूद, शांति सैनिकों की कभी-कभी अत्याचारों के सामने अप्रभावी या निष्क्रिय होने के लिए आलोचना की जाती है, जैसा कि रवांडा (1994) और बोस्निया (1995) में देखा गया है।
- हालांकि, संयुक्त राष्ट्र ने नागरिकों की सुरक्षा और अपने शांति सैनिकों की क्षमताओं को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करते हुए अपने संचालन को बेहतर बनाने के लिए लगातार कार्य किया है।

सुधार की आवश्यकता

- इन चुनौतियों से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र के अंदर, विशेष तौर पर सुरक्षा परिषद में सुधार की सख्त जरूरत है।
- स्थायी सदस्यों के पास वीटो की शक्ति प्रायः निर्णायक कार्रवाई में बाधा डालती है।
- भारत और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों को शामिल करने के लिए सुरक्षा परिषद का विस्तार करना और व्यक्तिगत वीटो के प्रभाव को सीमित करना संघर्ष क्षेत्रों में तेजी से कार्रवाई करने की संयुक्त राष्ट्र की क्षमता को बढ़ा सकता है।

निष्कर्ष

- संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना का भविष्य शांति को प्रभावी ढंग से लागू करने की इसकी क्षमता पर निर्भर करता है। महत्वपूर्ण सुधारों और निर्णायक कार्रवाई के प्रति प्रतिबद्धता के बिना, संयुक्त राष्ट्र बढ़ते वैश्विक संघर्षों के सामने अप्रासंगिक हो जाने का जोखिम उठाता है।
- विश्व को ऐसे ब्लू हेलमेट की ज़रूरत है जो निष्पक्षता एवं दृढ़ संकल्प के साथ शांति की रक्षा और उसे बनाए रखने के अपने जनादेश को पूरा करते हुए ब्लू हेलमेट की तरह कार्य करें।

Source: TH

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न
प्रश्न. आधुनिक शांति मिशनों की चुनौतियों और जटिलताओं को देखते हुए, क्या आप मानते हैं कि वर्तमान 'ब्लू हेलमेट' मॉडल अभी भी शांति और सुरक्षा सुनिश्चित करने में प्रभावी है, या इस अवधारणा और इसके कार्यान्वयन में बुनियादी परिवर्तन की आवश्यकता है?

■■■■